अनुलेख

विलय के बाद की यात्रा –

जब पानी भूल जाता है कि वह हाइड्रोजन था

पूज्य दाजी

के 70वें जन्मदिवस के अवसर पर
28 सितम्बर 2025 को कान्हा शान्तिवनम्
में दिए गए संदेश का अनुलेख

अनुलेख

विलय के बाद की यात्रा –

जब पानी भूल जाता है कि वह हाइड्रोजन था

प्रियजनों,

आध्यात्मिक यात्रा एक मूलभूत विरोधाभास प्रस्तुत करती है – जिसे हम अंतिम लक्ष्य समझते हैं वह वास्तव में सच्चे विकास का केवल आरम्भ ही है। यही अंतर्दृष्टि, जो सितम्बर 2025 के भण्डारे के दौरान साझा किए गए संदेश का केन्द्र बिन्दु है, हमें प्रगति, सफलता और आध्यात्मिक साक्षात्कार की प्रकृति के बारे में अपनी सबसे मूलभूत धारणाओं पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

हमारे संसार में लोग घटनाओं के अंत को लेकर आसक्त हैं। हमारे लिए मानो स्नातक होना, सेवानिवृत्ति और आत्मबोध प्राप्त कर लेना ही अंतिम लक्ष्य है। लेकिन प्रकृति हमें

कुछ और ही सिखाती है। अंधकार में संघर्ष करने के बाद जब कोई बीज मिट्टी को चीरकर अंकुर के रूप में बाहर आता है तब क्या वह अपनी यात्रा पूरी कर लेता है? नहीं, यह तो बस आरम्भ है। मिट्टी को चीरकर निकलना उसका लक्ष्य नहीं है; यह तो उस सबकी ओर पहला कदम है जो वास्तव में मायने रखता है – फोटोसिन्थिसिस यानी प्रकाश-संश्लेषण, पेड़ के रूप में बढ़ना, फल देना, छाया प्रदान करना और अंततः नए बीजों के लिए फिर से मिट्टी बन जाना।

जब बाबूजी ने कहा कि विलय आपको प्रारम्भिक साधक बनाता है, तब उनके कहने का यही तात्पर्य था। जब एक बूँद अपना अस्तित्व बनाए रखते हुए सागर में मिल जाने की खुशी मनाती है तब वास्तव में उसका विलय हुआ ही नहीं है। वास्तविक विलय में

अंधकार में संघर्ष करने के बाद जब कोई बीज मिट्टी को चीरकर अंकुर के रूप में बाहर आता है तब क्या वह अपनी यात्रा पूरी कर लेता है? नहीं, यह तो बस आरम्भ है। मिट्टी को चीरकर निकलना उसका लक्ष्य नहीं है; यह तो उस सबकी ओर पहला कदम है जो वास्तव में मायने रखता है – फोटोसिन्थिसिस यानी प्रकाश-संश्लेषण, पेड़ के रूप में बढ़ना, फल देना, छाया प्रदान करना और अंततः नए बीजों के लिए फिर से मिट्टी बन जाना।

तो कोई खुशी मनाने वाला बचता ही नहीं है। यही सबसे बड़ा विरोधाभास है।

परिवर्तन के पीछे का विज्ञान और दर्शन

मूलभूत रसायनशास्त्र जो गहन शिक्षा हमें देता है उस पर विचार करें – हाइड्रोजन वाष्पशील, खतरनाक और पकड़ में न आने वाला तत्त्व है; वहीं ऑक्सीजन प्रत्येक अग्नि को प्रज्वलित करती है और प्रत्येक वस्तु को जला देती है। फिर भी, जब वे मिलते हैं तब

क्या वे विनाश का प्रतीक बनते हैं? उन दोनों के विलय से पानी बनता है जो सम्पूर्ण जीवन का आधार है। लेकिन यहाँ अधिक गहन सच्चाई छिपी है – पानी को याद नहीं रहता कि वह हाइड्रोजन था। उसमें अब विस्फोटक स्वभाव का कोई अंश भी नहीं बचा रहता, यहाँ तक कि दबी हुई प्रवृत्ति के रूप में भी नहीं। यह रूपांतरण इतना पूर्ण होता है कि उसकी मूल प्रकृति के अस्तित्व में होने की अब सम्भावना भी नहीं रहती।

यह बात हमारी आध्यात्मिक उन्नति से जुड़ी है। प्रायः हम सोचते हैं कि आध्यात्मिक उन्नति का अर्थ है, हम जो हैं उसमें कुछ नया जोड़ना – जैसे कुछ नया सीख लेना या किसी बात में सुधार कर लेना। लेकिन सच्चा परिवर्तन कीमियागिरी की तरह होता है। उसमें हम केवल अपने अहंकार को नहीं बढ़ाते; बल्कि हम स्वयं को इतना रूपांतरित कर लेते हैं कि हमारी सत्ता ही बदल जाती है जो कि पूर्णतया भिन्न उद्देश्य की पूर्ति करती है।

प्रायः हम सोचते हैं कि आध्यात्मिक उन्नति का अर्थ है, हम जो हैं उसमें कुछ नया जोड़ना – जैसे कुछ नया सीख लेना या किसी बात में सुधार कर लेना। लेकिन सच्चा परिवर्तन कीमियागिरी की तरह होता है। उसमें हम केवल अपने अहंकार को नहीं बढ़ाते; बल्कि हम स्वयं को इतना रूपांतरित कर लेते हैं कि हमारी सत्ता ही बदल जाती है जो कि पूर्णतया भिन्न उद्देश्य की पूर्ति करती है।

भगवद् गीता स्वधर्म अर्थात् अपने व्यक्तिगत कर्तव्य अथवा उद्देश्य की विवेचना करती है। लेकिन तब क्या होता है जब परिवर्तन इतना गहन हो कि इससे हमारा मूलभूत स्वभाव ही रूपांतरित हो जाए? पानी का धर्म हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के समान नहीं होता। इन दोनों से मिलकर बने इस पदार्थ का नया धर्म है – बहना, पोषित करना, स्वच्छ करना और जीवन को बनाए रखना।

संदेश यह है – हम बेहतर बूँदें बनने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। हम यह सीख रहे हैं कि हमारा मूल स्वभाव कभी भी ''बूँदपन'' था ही नहीं। यहाँ तक कि यह समझ, जोकि बहुत महत्त्वपूर्ण है, केवल हमें उस वास्तविक कार्य को आरम्भ करने के लिए तैयार करती है।

इस संदेश का दैनिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है? पहला, यह समस्याओं और चुनौतियों को देखने के हमारे दृष्टिकोण को बदल देता है। एक जागरूक व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत यात्रा में ट्रैफिक जैम जैसी स्थिति को समस्या के रूप में नहीं देखता। वह स्वयं को समग्र प्रवाह के अंश के रूप में देखता है और यह दृष्टिकोण उसकी प्रतिक्रियाओं को प्रभावित करता है। हो सकता है कि वह भिन्न रास्ता अपनाए, इसलिए नहीं कि ''मुझे वहाँ जल्दी पहुँचना है,'' बल्कि इसलिए कि ऐसा करने से सम्पूर्ण प्रवाह को लाभ होता है।

यही समझ हमारे सम्बन्धों की पूरी दिशा बदल देती है। अधिकांश झगड़े तब होते हैं जब दो बूँदें यानी व्यक्ति अलग रहने की कोशिश करते हैं और यह दावा भी करते हैं कि वे साथ रहना चाहते हैं। जब दोनों समझ जाते हैं कि वे कभी भी दो अलग बूँदें थे ही नहीं बल्कि वे तो हमेशा से एक ही पानी यानी मानवता की अभिव्यक्ति थे, तो वे अलग नहीं रह जाते।

वैदिक परम्परा प्रयत्न और प्रसाद के बारे में बात करती है। विलय से पहले, हम सागर बनने का प्रयास करते हैं। विलय के बाद, हमें बोध होता है कि हम हमेशा से सागर ही थे जो स्वयं को बूँद मान रहे थे। लेकिन फिर सबसे चुनौतीपूर्ण चरण आता है – बूँद बने रहने का चुनाव करना जबकि हम जानते हैं कि हम सागर हैं। यह एक ऐसा विरोधाभास है जो रहस्यों से भरा हुआ है।

इसी कारण से बाबूजी इसे आरम्भ कहते हैं। एक अभिनेता किसी भूमिका में खो सकता है लेकिन क्या आप यह जानते हुए कि आप केवल अभिनय कर रहे हैं, इस भूमिका को पूर्णता से निभा सकते हैं? क्या यह सम्भव है कि आप पूर्णतया मानव हों और फिर भी

यह जानें कि आप दिव्य हैं? क्या आप शरीर की सीमाओं को महसूस कर सकते हैं, जबकि आप असीम में स्थित हैं?

सीमित करने का ज्ञान

यहीं पर दर्शन वास्तविक जीवन में लागू होना शुरू होता है। पानी अपने पात्र का आकार ले लेता है, इसलिए नहीं कि उसे आकार नहीं दिया जा सकता बल्कि ऐसा इसलिए कि बिना आकार के होना उपयोगी नहीं है। कप में डाले गए पानी को सहजता से पीया जा सकता है। यह पानी बादलों में बारिश का रूप ले लेता है। रक्त वाहिकाओं में यह स्वयं जीवन बन जाता है। इसी प्रकार, परिवर्तन की क्षमता ही हमें सशक्त बनाती है।

परिवर्तन की क्षमता ही हमें सशक्त बनाती है।

विलय के बाद की यात्रा यह सीखने की होती है कि सीमाओं को पालन किए जाने वाले नियमों की तरह नहीं बल्कि रचनात्मक चुनावों के रूप में देखा जाए। आपने अपने वर्तमान जीवन का स्वरूप इसलिए नहीं चुना क्योंकि आपको ऐसा करना पड़ा, बल्कि इसलिए चुना क्योंकि यह आपके जीवन के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक है।

विलय के बाद की यात्रा यह सीखने की होती है कि सीमाओं को पालन किए जाने वाले नियमों की तरह नहीं बल्कि रचनात्मक चुनावों के रूप में देखा जाए। आपने अपने वर्तमान जीवन का स्वरूप इसलिए नहीं चुना क्योंकि आपको ऐसा करना पड़ा, बल्कि इसलिए चुना क्योंकि यह आपके जीवन के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक है।

वह आध्यात्मिक अहंकार जो दावा करता है, "मेरा विलय हो गया है," सबसे खतरनाक जाल है। यह उस हाइड्रोजन के समान है जो पानी होने का दिखावा करता है, पर वास्तव में वह हाइड्रोजन ही है। असली पानी को यह बताने कि आवश्यकता नहीं होती कि वह क्या है। वह तो प्रवाहित होता है, पोषित करता है और स्वच्छ करता है। उसका स्वयं का अस्तित्व ही उसकी घोषणा है।

यह समझ हमें अत्यधिक आध्यात्मिक होने के थका देने वाले कार्य से मुक्त करती है। हमें सर्वज्ञ होने का दिखावा करने की आवश्यकता नहीं है और न ही अनोखे तरीकों से बोलने की आवश्यकता है। हमें बस पानी के जैसा बनना है – सदैव उपस्थित, उपयोगी और हर क्षण की आवश्यकता के अनुसार ढल जाने वाला।

असीम सेवा

जब गणितज्ञों ने अनेक अनंतताओं की खोज की, जिसमें से प्रत्येक भिन्न है और अन्य को अपने में समेटे हुए है, तब उन्होंने एक गहन आध्यात्मिक सत्य को उजागर किया। विलय के बाद, यात्रा अधिक बड़ा बनने के बारे में नहीं होती। यह अपनी सीमाओं में रहते हुए सेवा करने के अनंत तरीकों को खोजने के बारे में है।

यह बात एक माँ के अपने बच्चे को भोजन कराने के उदाहरण से स्पष्ट हो जाती है। बच्चे की देखभाल करने के लिए उसे ब्रह्माण्ड का ज्ञान होना आवश्यक नहीं है। मात्र एक व्यक्ति से माँ बनने का उसका परिवर्तन पूर्ण है – और अपने प्रयोजन के लिए परिपूर्ण

भी। लेकिन फिर भी इस "सीमितता" के भीतर रहकर भी वह प्रेम की असीमता को स्पर्श कर लेती है।

विलय के बाद, यात्रा अधिक बड़ा बनने के बारे में नहीं होती। यह अपनी सीमाओं में रहते हुए सेवा करने के अनंत तरीकों को खोजने के बारे में है।

यह शिक्षा आध्यात्मिक अभ्यास के प्रति हमारे दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल देती है। अब हम असाधारण अनुभव प्राप्त करने की इच्छा के बजाय साधारण में भी गहनता की पहचान करना सीखते हैं। बर्तन धोने का कार्य एक सीख बन जाता है कि वस्तुएँ कैसे विकसित होती हैं। साँस लेना हमें सिखाता है कि जो आवश्यक है उसका आदान-प्रदान कैसे किया जाता है। हर बार जब हम किसी से बात करते हैं तब हमारे पास प्रेम की खातिर सचेत सीमितता का अभ्यास करने का अवसर होता है।

असीम होना हमें अत्यधिक स्वतंत्रता नहीं देता। यह वैसे ही है जैसे पानी स्वयं ठोस बने रहने के लिए बर्फ बनने का, ऊपर उठने के लिए भाप बनने का अथवा बहने के लिए तरल रूप में बने रहने का चयन करता है। उसका हर एक स्वरूप अपने समय पर पूर्ण होता है और उनके बीच के परिवर्तन स्वाभाविक रूप से तब होते हैं जब उनकी आवश्यकता होती है – न कि इसलिए कि लोग अपनी वर्तमान अवस्था में नाखुश हैं। शायद यही सच्ची स्वतंत्रता है।

जीवन जीने के लिए संदेश – जब आप अपने दैनिक कार्य में व्यस्त रहें तब याद रखें कि आप सागर बनने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं। आप हर प्रकार से पानी जैसा बने रहना सीख रहे हैं जो इसी क्षण की आवश्यकता को पूरा करता है। जब आप पानी पीते हैं तब हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के बारे में सोचें जिन्होंने जीवन को सहारा देने के लिए स्वयं

अपने अलग-अलग अस्तित्व का त्याग कर दिया। जब समस्याएँ आएँ तब पानी की तरह बनकर ऐसा रास्ता निकालें जो न केवल आपकी आवश्यकताओं को पूरा करे बल्कि समग्र जीव के हित में हो।

असीम होना हमें अत्यधिक स्वतंत्रता नहीं देता। यह वैसे ही है जैसे पानी स्वयं ठोस बने रहने के लिए बर्फ बनने का, ऊपर उठने के लिए भाप बनने का अथवा बहने के लिए तरल रूप में बने रहने का चयन करता है। उसका हर एक स्वरूप अपने समय पर पूर्ण होता है और उनके बीच के परिवर्तन स्वाभाविक रूप से तब होते हैं जब उनकी आवश्यकता होती है – न कि इसलिए कि लोग अपनी वर्तमान अवस्था में नाखुश हैं।

विलय के बाद, यात्रा अधिक प्राप्त करने के लिए नहीं है। यह इस बात को जानने के लिए है कि अच्छी मंशा से त्याग करके आप क्या बन सकते हैं, स्वयं को सीमित करने का चयन करके आप किस प्रकार सेवा कर सकते हैं और यह जानते हुए कि आप निराकार हैं आप अपने सीमित स्वरूप को स्वीकारते हुए कैसे प्रेम कर सकते हैं।

यह एक मार्गरहित मार्ग है जो सभी मार्गों से परे है। मार्ग बनने का अर्थ है अपने ऊपर स्वतंत्रता को थोपना। जब लोग गुरुदेवों से पूछते हैं कि ज्ञानोदय के बाद क्या होता है, तब वे मुस्कुरा देते हैं। वे आपको पानी का गिलास देते हैं और प्रतीक्षा करते हैं कि आप साधारण में अनंत, सरल वस्तुओं में गहनता, पर्याप्तता में सबकुछ खोजें – यही पर्याप्तता में समग्रता को पाने का सारतत्त्व है।

उस आत्म-बोध में सबसे अद्‌भुत परिवर्तन होता है – ऐसा नहीं है कि जो सामान्य था वह पवित्र बन गया है बल्कि आप अंततः देख पाते हैं कि यह हमेशा से ऐसा ही था।

पानी हमेशा से पवित्र ही था। हमें बस यह सीखने की आवश्यकता थी कि इसे कैसे देखना है।

महान मालिक से प्रार्थनाओं के साथ,
कमलेश

ऐसा नहीं है कि जो सामान्य था वह पवित्र बन गया है बल्कि आप अंततः देख पाते हैं कि यह हमेशा से ऐसा ही था। पानी हमेशा से पवित्र ही था। हमें बस यह सीखने की आवश्यकता थी कि इसे कैसे देखना है।